आर्योदय

ARYODAYE

Read Aryodaye on line -- www.aryasabhamauritius.mu

Weekly Aryodaye No. 372 ARYA SABHA MAURITIUS *13th Aug. to 20th Aug. 2017*

Arya Bhawan, 1 Maharshi Dayanand St., Port Louis, Tel : 2122730, 2087504, Fax : 2103778, Email ID : aryamu@intnet.mu

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE

- VEDA

ओ३म्।। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्।
दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः।।

ऋग्वेद १०-१९०-३

शब्दार्थ :- **धाता** - जगत् का कर्ता परमेश्वर, **सूर्याचन्द्रमसौ** - सूर्य और चन्द्रमा आदि को, **यथापूर्वम्** - पूर्वकल्प के समान और जैसा हो सकते हैं, वैसा ही बना लेता है और बनायेगा भी, **दिवम्** - द्युलोक, **च** - और, **पृथिवीम्** - पृथिवी, **च** - और, **अन्तरिक्षम्** - अन्तरिक्ष, **अथ** - तथा, **स्वः** - प्रकाशमान पदार्थों को बनाता है।

भावार्थ :- *जगत् का कर्ता परमेश्वर सूर्य और चन्द्रमा आदि समस्त जगत् को पूर्वकल्प के समान ही बनाता है, अतः वैसा ही बना लिया था। द्युलोक, पृथिवी, अन्तरिक्ष और प्रकाश्य अप्रकाश्य समस्त पदार्थों को पूर्वकल्प के समान ही बनाता और बनायेगा भी।*

(महर्षि दयानन्द सरस्वती)

Om Sūryāchandramasau Dhātā Yathapūrvamakalpayat.
Divam Cha Prithivīm Chantarikshamatho Svah.

Rigved 10-190-3

Meaning of words :-- **Sūrya** - the sun , **chandra** - the moon , **dhātā** - holder, supporter , **Yathāpūrvam** - similar to the previous cycles of creation , **akalpayat** – manifested, **divam** - the celestial region, **cha** – and , **prithivīm** - the earth , **antariksham** - outer space, **atho** – and, **swah** - the luminous bodies located in the sky

Purport :-- *God, the Supporter and Controller of the universe created the sun, the moon, the earth, outer space and all the luminous bodies located in the sky as He had done in the previous cycles of creation.*

Explanation :-- God is Eternal. He has no beginning and no end. Likewise, the cycles of creation have no beginning. After creating the universe, God preserves it. A time then comes for dissolution. In its aftermath, the cycle of creation begins anew. God thus recreates all the planets and the luminous bodies as per the previous pattern.

Dr O.N. Gangoo

समाज का मेरुदण्ड : युवा पीढ़ी

डॉ० उदय नारायण गंगू, ओ.एस.के., जी.ओ.एस.के., आर्य रत्न

शैशव और बालावस्था की चौखट पार करके जब व्यक्ति यौवनावस्था में पहुँचता है तब उसे अनेक उत्तरदायित्वों का वहन करना पड़ता है। उसके मज़बूत कन्धों पर परिवार, समाज और राष्ट्र को उन्नत करने का भार आ जाता है। शिक्षित और सदाचारी युवक-युवती ही अपना तथा अन्य का भला कर सकते हैं।

जवानी सबके लिए वरदान है, क्योंकि जीवन के इस पड़ाव में शरीर के सभी अवयव सबल होते हैं। एक ओर जहाँ बलयुक्त, तपस्वी एवं चरित्र के धनी युवाओं ने विश्व के इतिहास को अपने सुकर्मों से गौरवान्वित किया है, वहीं दूसरी ओर भोग के सागर में डूबे नौजवानों ने अपनी जवानी को कलंकित कर दिया है।

कर्तव्य-च्युत युवाओं का मार्गदर्शन करते हुए भारत के राष्ट्रकवि, मैथिलीशरण गुप्त जी ने लिखा है -

हे नवयुवाओ, देशभर की दृष्टि तुम पर ही पड़ी ।
है मनुज जीवन की ज्योति तुमीं में सबसे जगमगी।।
दोगे न तुम तो कौन देगा योग देशोद्धार में।
देखो कहाँ क्या हो रहा, आजकल इस संसार में ।।

कवि की व्यक्त उपर्युक्त भावना के ही अनुकूल एक देश भक्त वेद के शब्दों में भगवान् से प्रार्थना करता है – **'सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम्'** – अर्थात् बलवान्, सभ्य, योद्धा और यजमान पुत्र होवें।

हमारे युवाओं को बलवान्, सभ्य, योद्धा और यजमान बनाने के उद्देश्य से 'आर्य परोपकारिणी सभा' द्वारा सन् १९२५ में आयोजित 'दयानन्द जन्म शताब्दी' के शुभावसर पर भारत से आये प्रकाण्ड वैदिक विद्वान् बारिस्टर जैमिनी मेहता जी ने 'आर्यकुमार सभा' की स्थापना की थी, जिसके कर्णधार सुग्रीव विष्णुदयाल, वासुदेव विष्णुदयाल,सुखदेव विष्णुदयाल, तिलकप्रसाद कालीचरण आदि युवा बने थे। उन नवयुवकों ने आगे चलकर अपने तप-त्याग से मॉरीशस के इतिहास का निर्माण किया।

'आर्यकुमार सभा' के पश्चात् आर्य सभा ने सन् १९६७ में 'आर्य युवक संघ' की स्थापना की, जिसके प्रथम प्रधान स्वर्गीय डॉक्टर हरिदत्त घूरा और मन्त्री स्वर्गीय मूलशंकर रामधनी जी बने थे। श्री मोहनलाल जी मोहित अपनी पुस्तक – 'आर्य सभा मोरिशस का इतिहास' - में आर्य युवक संघ के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए लिखते हैं –

१. इस लघु उपनिवेश के वातावरण में भारतीयों के सुख एवं शांति के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए वैदिक धर्म, वैदिक संस्कृति तथा सभ्यता की सुदृढ़ नींव पर आर्य युवकों का चारित्रिक और नैतिक निर्माण कर उनमें इस देश के आर्य जगत् की सुरक्षा और देश की स्वाधीनता की रक्षा के निमित्त जन जीवन में राष्ट्रीय भावना उत्पन्न करना।

शेष भाग पृष्ठ २ पर

सम्पादकीय

मान-प्रतिष्ठा

हमारे पूर्वज अपने धर्म, संस्कृति, भाषा और सभ्यता को अपनी धरोहर के रूप में लेकर मॉरीशस आए थे। वे आप्रवासी भारतीय मज़दूर शक्कर-कोठी के मालिकों के घोर अत्याचार सहन करते हुए अपनी अमूल्य धरोहरों की मान-प्रतिष्ठा सुरक्षित करने में बड़ा ही तपोत्याग करते रहते थे। उनके तपोबल पर ही आज तक हमारे धर्म, संस्कृति, भाषा और सभ्यता यहाँ जीवित और सम्मानित हैं।

मॉरीशस एक बहुजातीय देश है। यहाँ की हर एक जाति कीर्तिमान बनना चाहती है, ताकि अन्य जातियों के साथ-साथ वह भी गौरवांवित हो। एक-दूसरे का मान-सम्मान करते हुए हम यहाँ आपसी प्रेम, सहयोग और पुरुषार्थ से जीते हैं। हमारे मेल-मिलाप की ज़िन्दगी से प्रभावित होकर विदेशी लोग अचम्भे में पड़ जाते हैं और हमारी प्रशंसा करते हैं।

जाति-प्रतिष्ठा बढ़ाना हर एक व्यक्ति का प्रमुख लक्ष्य है, क्योंकि एक बहु-साम्प्रदायिक देश में अप्रतिष्ठित होने से किसी भी जाति की उन्नति निश्चित नहीं होती है। हम उन सभी भाई-बहनों के आभारी हैं, जो आज तक अपने पूर्वजों की धरोहरों की मान-प्रतिष्ठा स्थापित करने में आत्म-समर्पित हैं – भारतीय संस्कृति, भाषादि का गौरव बढ़ाने के अभिलाषी हैं। वे अनेक प्रकार के प्रलोभनों से मुँह मोड़कर अपनी जाति की मान्यता बढ़ा रहे हैं। उन्हींकी बुद्धिमता, तपस्या और दूरदर्शिता से इस देश में हिन्दू जाति की मान-मर्यादा अन्य जातियों के बराबर होती है।

यह खेद की बात है कि आज हमारी जाति की मान-हानि पहुँचाने वाले भी अनेक हिन्दू भाई-बहन ही हमारे देश में विद्यमान हैं। हज़ारों की संख्या में अज्ञानता के कारण कितने हिन्दू स्वधर्म, संस्कृति और भाषा का परित्याग करते हुए (Mission salue et Geurison) आदि के भ्रमजाल में फँसकर हमारी जाति का गौरव घटा रहे हैं। असंख्य लोग धार्मिक शिक्षा के अभाव में पाश्चात्य सभ्यता की ओर अग्रसर होकर कुसंगी हो गए हैं। वे अभक्ष्य भोजन, नशीले पदार्थ तथा मादक-द्रव्य सेवन करने लगे हैं। कितने प्रतिष्ठित हिन्दू परिवार के सदस्य अपने दुर्गुणों के कारण अपनी जाति की छबि खराब कर रहे हैं।

हमारे कई परिवारों में आपसी प्रेम, सहयोग, एकता और मान-सम्मान घट जाने से दरार पैदा हो रही है। हमारी अनेक संतानें अपनी अलग दुनिया में जी रही हैं। कितनी महिलाएँ बेढंगे वस्त्र पहनकर भारतीय सभ्यता को बदनाम कर रही हैं। हमारी कितनी कन्याएँ गैर जाति के लड़कों से सम्बन्ध जोड़कर हमसे पराई हो रही हैं और हम देखते रहते हैं। इन मान-हानियों के कारण हिन्दू परिवार लज्जित हैं।

हिन्दू समाज के उत्थान में बाधा पहुँचाने वाले लोगों की संख्या में वृद्धि होती जा रही है। उनके दुर्गुणों और कुकर्मों से हमारी मान-हानि हो रही है। कितनी सामाजिक संस्थाओं में बिरादरी के विनाशकारी अंकुर फुट जाने से मतभेद पैदा हो रहे हैं। हमारी जाति की एकता में लचीलापन महसूस हो रहा है। घरेलू वातावरण दूषित होने से घरेलू हिंसा, तनाव, झगड़े और विवाह-विच्छेद की समस्याएँ पैदा हो रही हैं। ऐसा लगता है कि आज पारिवारिक, सामाजिक और राजनैतिक स्तर तक हमारी जाति की कीर्ति में बाधा पहुँचाने वाले अबोध हिन्दू अपनी ही जाति को क्षति पहुँचा रहे हैं। हिन्दू समुदाय की स्थिति देखकर ऐसा लगता है कि हमारे धर्म, समाज और संस्कृति की चलती हुई गाड़ी अपनी पटरी से उतर गई है, जो हमारे लिए चिन्ता का विषय बन गया है।

हमारे प्रतिष्ठित सज्जनों के सहयोग से आज तक हमारे देश में हिन्दू जाति सम्मानित और प्रतिष्ठित है। हमारा धर्म, संस्कृति, सभ्यता और भाषा जीवित है, अगर हम अपने ही बन्धनों को मान-हानि पहुँचाने में लगे रहेंगे, तो निःसंदेह वैदिक धर्म, भारतीय संस्कृति, सभ्यता और स्वभाषा का भविष्य अन्धकारमय हो जाएगा।

आर्यसमाज एक मानवोद्धारक संघटन है, ज्ञानालोक में रखने वाला श्रेष्ठ समाज है और प्रतिष्ठित जनों की उत्पत्ति करनेवाली संस्था है। हम अगर अपनी जाति की प्रतिष्ठा निमित्त कर्म करेंगे तो हमारी मान-मर्यादा इस सुन्दर बहुजातीय देश में हमेशा स्थापित रहेगी और हमारे पूर्वजों की तपस्या साकार होगी । ध्यान रहे कि जिस जाति की मान-प्रतिष्ठा नहीं, वह उन्नति नहीं कर सकती है ।

बालचन्द तानाकूर

श्रावणी और स्वाध्याय

सत्यदेव प्रीतम,सी.एस.के.,आर्य रत्न, मंत्री आर्य सभा

श्रावणी एक बहुत पुराना वैदिक पर्व है। वह श्रावण के मास के अन्तर्गत आता है। भारतवर्ष एक कृषि प्रधान देश होते हुए वर्षा-बहुल देश भी है। जब वर्षा शुरू होती है तो कई महीनों तक चलती रहती है।

किसान खेत जोतकर ज़मीन में बीज डाल दिये होते हैं। सेना के जवान सैन्यावास में रहते हैं। व्यापारी वृन्द व्यापार करने के लिए बाहर नहीं जा पाते। सब मिलाकर भारतीय जनता के पास अवकाश ही अवकाश होता है।

ऋषि-मुनि, वानप्रस्थी, विद्वानगण वनस्थली को छोड़कर गाँवों व शहरों के किनारे उपनगर में आकर जनता के बीच वेदों का पाठ, मंत्रों की व्याख्या एवं विशद रूप से ज्ञान की चर्चा करते हैं, जिससे सभी लोग लाभ उठाते हैं।

प्रश्न उठता है कि वेदों के पठन-पाठन ही पर क्यों इतना ज़ोर दिया जाता है। उत्तर यह है कि वैदिक काल में वेदों के अलावा अन्य साहित्य की कमी थी या वेदों से वेदोत्तर साहित्य का जन्म हो रहा था – जैसे – ब्राह्मण ग्रंथ आरण्यक, उपनिषद दर्शनादि । फिर वेद ही ईश्वरीय या अपौरुषेय ज्ञान है। वेद-ज्ञान की खान है। वेदों में सभी विद्याएँ बीज रूप में निहित हैं। वेदों में सत्य-ज्ञान के अलावा सभी पदार्थ ज्ञान भी है।

वैदिकेत्तर काल में देखा गया कि जब लोग वेद को भूल गए तो समाज पतन की ओर चला गया। इसीलिए तो डण्डी गुरु विरजानन्द ने स्वामी दयानन्द को विदाई देते हुए प्रण करवाया था कि वेद-ज्ञान जो लुप्त हो गया है, उस को फिर से उजागर किया जाए। जब स्वामी सेवा के लिए कर्म क्षेत्र में उतरे तो उन्होंने देखा कि सचमुच वेद ज्ञान से ही सोये हुए पूरे भारत देश को जगाया जा सकता था। इसीलिए तो स्वामी जी ने आह्वान किया- वेदों की ओर लौटें।

जब संस्कार विधि का प्रणयन किया गया; जब सत्यार्थप्रकाश की रचना की थी, वेद भाष्य किया गया और आर्यसमाज की स्थापना के दो वर्ष बाद याने १८७७ में लाहौर पंजाब में बैठकर पूर्व में बनाये गये २८ नियमों को पढ़कर उनमें से १० नियम निश्चित किये गये तो उन्होंने पहले ही नियम में लिख दिया, 'सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदि मूल परमेश्वर है और तीसरे में सीधे लिख दिया – वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

जीवन के जो चार आश्रम हैं, उनमें विद्यार्थी जीवन तो बना ही है, विद्या ग्रहण के लिए, फिर जब विद्यार्थी गुरुकुल छोड़कर गृहस्थाश्रम में प्रवेश करता है तो आचार्य बोलता है, **'स्वाध्यायान्मा प्रमदः स्वाध्याय प्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्'** गृहस्थाश्रम के बाद 'वानप्रस्थ' आश्रम आता है, जिसमें स्वाध्याय और तप ही रह जाता है, जीवन का अंतिम पड़ाव संन्यास आश्रम में भी स्वाध्याय ही मुख्य कर्त्तव्य रह जाता है।

स्वाध्याय का महत्व बताते हुए तत्व ज्ञानियों का कहना है कि जैसे शरीर का आधार अन्न है उसी प्रकार मन का आधार स्वाध्याय है। स्वाध्याय ही मन का भोजन है। मन की उन्नति में ही आत्मा की उन्नति है। इन तीन उत्कर्षों के बाद ही समाज की उन्नति है। इसलिए स्वामी जी ने छठे नियम में लिखा, 'संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात शारीरिक, आत्मिक तब फिर अन्त में सामाजिक उन्नति होती है। व्यक्ति बदले, समाज बदलेगा क्योंकि व्यक्ति के समूह को समाज की संज्ञा दी जाती है। समाज बदलेगा / देश बदलेगा अन्त में संसार बदल जाएगा। इसलिए ऋषि ने अपनी आर्ष दृष्टि से देखकर कहा था - *'सारे संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है।'*

पृष्ठ १ का शेष भाग

२. आर्य युवकों में शारीरिक उन्नति की क्षमता, आत्मविश्वास, आत्म रक्षा, बौद्धिक एवं आत्मिक विकास की भावना भरकर उनमें प्रेम, सेवा, त्याग तथा पुरुषार्थ की प्रवृत्ति जाग्रत करना ।

३. इस संघ में अठारह वर्ष से ऊपर का हर वीर, साहसी, संयमी तथा उद्योगी युवक तथा प्रौढ़ प्रविष्ट हो सकता है।

४. इस संघ का कार्यक्षेत्र आर्य सभा के अन्तर्गत तथा उसकी संरक्षक में है।

(आर्य सभा मोरिशस का इतिहास, पृ० ६९-७०)

१९६७ से अब तक 'आर्य युवक संघ' गतिशील रहा है। इस संघ की ध्वजा-तले युवकों को लाने के लिए बहुविध कार्य किये गये। २० नवम्बर १९७१ को आर्यभवन पोर्टलुई में दोपहर ढाई बजे आर्य युवक संघ ने त्रैमासिक वैदिक पत्रिका

(Vedic Journal) के प्रथम अंक का प्रकाशन किया। पत्र के सम्पादक डॉ० सुदर्शन जगेसर ने पत्र के उद्देश्य एवं महत्व पर भाषण दिया था।

जब प्रोफ़ेसर सुदर्शन जगेसर जी इस संघ के अध्यक्ष बने तब उन्होंने मॉरीशस के चार प्रान्तों में चार यूथ ऑफ़िसरों (Youth Officers) की नियुक्ति की और युवा पीढ़ी के मन-मस्तिष्क को उत्कृष्ट विचारों से सजाने के लिए 'Vedic Journal' में उत्तमोत्तम लेखकों का प्रकाशन प्रारम्भ किया। वर्तमान 'आर्य युवक संघ' अपने पूर्वगामी युवाओं के ही पदचिह्नों का अनुकरण करते हुए इस समय 'यूथ मैगज़िन' नियमित रूप से निकालते आ रहा है।

वर्षों से हमारे युवक-युवति प्रति वर्ष भारत के स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर अपना वार्षिकोत्सव राष्ट्रीय स्तर पर एक भव्य कार्यक्रम के साथ मनाते हैं। इस

वर्ष के १३ अगस्त को आर्ययुवक संघ ने माहेवर्ग आर्यसमाज के शानदार भवन में प्रस्तुत अपने विविध कार्यक्रमों से श्रोताओं को मन्त्र-मुग्ध कर दिया। 'आर्ययुवक संघ' के प्रधान श्री धरमवीर गंगू जी ने 'पावर पोइन्ट' के माध्यम से अपना सारगर्भित भाषण दिया, जिसमें भारतीय स्वतन्त्रता सेनानियों के प्रति कृतज्ञता प्रकट की एवं ऋषि-भूमि भारत का यशोगान किया। उपस्थित गण्यमान्य जनों ने उनके वक्तव्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

हमारी कामना है कि 'आर्ययुवक-युवतियाँ' कुछ ऐसा काम कर जायें कि वे आर्यसमाज के इतिहास में अपना नाम अमर कर लें। यह तभी सम्भव होगा, जब वे वेद की निम्नलिखित सूक्ति को अपने आचरण में परिणत कर पायेंगे - **'सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम् ।'**

मनुर्भव | *पंडित राजमन रामसाहा, आर्य भूषण*

मनुर्भव का हिन्दी वाक्य (मनुष्य बन) होता है। दो पैरों पर खड़े होने और कन्धों के ऊपर विचार करने वाले सिर रखकर जीने वाले प्राणी को मनुष्य कहा जाता है। वह सोचने और विचार करने वाला हो जाने पर मनुष्य कहला जाता है, पर उसी को वेद कहता है कि तू मनुष्य नहीं है, तुझे मनुष्य बनना चाहिए। इसका माने है कि मनुष्य से मनुष्य के घर पर जन्मे मनुष्य मनुष्य नहीं होता है, जन्म लेने पर विचार और कर्म करने योग्य बनने के बाद वेद की आज्ञा को पालन करना चाहिए, तब कहीं जाकर वह मनुष्य बन पाएगा।

कितने लोग वेदाज्ञा पालन करने वाले का देखा-देखी सिर्फ़ अनुकरण करने से मानवता के अनुकूल बन जाते हैं। इस आज्ञार्थक वाक्य के माने हैं कि सदिच्छा करने और शुद्ध सोचते रहने से हम मनुष्य कहलाते हुए मनुष्य बन सकते हैं। तब तो मनुष्य बनने के लिए बहुत कुछ करने की ज़रूरत है। स्वतन्त्र रहने से मनुष्य कुछ भी बन जाता है। तभी तो मनुष्य को मनुष्य ही से डर लगा रहता है । अनजाने मनुष्य मनुष्य की जान के दुश्मन बने होते हैं ।

पहले पहल मनुष्य बनने के लिए जीवन में संयम-नियम चाहिए। फ़िज़ूल ख़र्च की चाहों को मिटाना चाहिए और पापी विचारों से दूर रहना चाहिए। ऐसा जीवन बिताने का ढंग चाहिए, जिससे हमारे वंश अच्छे बनें और दूसरे लोग भी सीखकर किसी को हानि करने वाले न बनें। सदा स्मरण रखना है कि देवता और मनुष्य शब्द एक ही है । सृष्टि के आरम्भ में मनुष्य दो प्रकार के थे – ऐसा ग्रन्थों में लिखा मिलता है। तभी तो आदिकाल के युद्धों को देवासुर संग्राम कहते हैं।

एक प्रकार के जो असुर हुए, वे सिर्फ़ लेना जानते थे। वे जितना लेते थे उन्हें बस नहीं होता था। मन भर लेने में दूसरों का हक़ भी चुराने वाले बन जाते थे। वे दुखियों को भी लुटकर खा जाने वाले होते थे। उनके गिरोह में कोई सुर मिलता ही नहीं था। वे असुर कहलाने लगते थे। (सुर) देवता और सूर्य को कहते हैं। देवता देने वाले होते थे। वे निर्बलों के रक्षक होते थे। सूर्य प्रकाश करने वाला ग्रह है। और असुर जो देते नहीं, जो रक्षा करते नहीं और जो प्रकाशित होते नहीं। वे केवल लेते थे, दूसरों का हक़ भी चुरा ले जाते थे। अच्छाई का नाश करते थे और मनुष्य के समाज में अन्धेरा किए रहते थे।

जो देवता और असुर इन दोनों के बीच में कमज़ोर हुए – वे मनुष्य कहलाए। तभी तो वेद ने इसी कमज़ोर जीव को मनुर्भव अर्थात् मनुष्य बनने का आदेश दिया। उसे अर्जुन जैसे जीवन संग्राम में लड़ना-सीखना है। उसे अपने अन्न और धन की सुरक्षा स्वयं करने योग्य बनना है। जिन लोगों को असुरों के अत्याचार से सुरक्षा चाहिए, जिन्हें देवताओं की कृपा चाहिए, उन्हीं कमज़ोरों को मनुष्य का नाम मिला है, मनुष्य अपने बचाव में कभी सबल असुर का साथ दे सकता है तो कभी ईश्वर के निःस्वार्थ भक्त-देवता के भी पक्ष में रह सकता है। सदा से संसार में देवता बहुत कम रहे हैं। असुरों की संख्या अधिक रही है।

चाहे मनुष्य दोनों का कमज़ोर रूप है। पर वह अपनी कमज़ोरियों के कारण आसुरी विचारों का शिकार जल्दी से हो जाता है। उन कमज़ोर मनुष्यों से वेद आशा करते हैं कि मनुष्य बनने में देवता के रास्ते पर चलने वाले बनें। मनुष्य देवता बनने ही पर पूजनीय बन पाता है। यही कारण है कि जब ब्रह्मा ने अपने इन तीनों प्रकार के बच्चों को एक ही प्रकार (द) अक्षर की शिक्षा दी थी तब असुर ने 'दया' करने का अर्थ लिया था और देवताओं ने 'दमन' का और मनुष्य ने 'दान' का। वैसे तो देवता सब पर दया करते हैं ही, पर जब असुर दया करने वाला बनता है तब अत्याचार नहीं होता है। इसी तरह असुर गण दूसरों को दमन करते हैं। पर जब देवताओं ने अपनी इच्छाओं का दमन करने को सोचा तो लगता है कि दमन एक क्रिया है। इसी तरह मनुष्य जो उन दोनों से कमज़ोर है उसने दान देने का अर्थ लिया। यह तो देवताओं का गुण है।

वैसे दया, दमन और दान करना तीनों गिरोहों में मनुष्य बनने के लिए बड़ी आवश्यक है। कितने मनुष्य हृदय के बड़े कठोर होते हैं, वे दूसरों पर दया न करके बड़े स्वार्थी बन जाते हैं, वे अपने अन्दर की बुराइयों का दमन न करके पहले नम्बर के पापी बन जाते हैं। वे बुराइयों की जगह अच्छाइयों का दमन करने लगते हैं। ये मनुष्य के ही जीवन में बड़े-छोटे दिलवाले होकर दान देना बिल्कुल पसन्द नहीं करते।

मुझे लगता है कि जिसे देवता, दानव और मानव कहकर तीन प्रकार के लोगों का वर्गीकरण हुआ है, ये तीनों के तीनों मनुष्य ही हैं। इनको मनुष्य बनने में दमन, दया और दान रूपी गुण इन्हीं में चाहिए। जब वे संयम-नियमों का पालन करने से अपने मन का दमन करके अपने से कमज़ोर वालों पर दया करके दान करने का स्वभाव रखते हैं, तभी वे मनुर्भवन्ति अर्थात् वे मनुष्य हो जाते हैं।

यहाँ कोई न देवता है और न असुर। बल्कि सभी के सभी मनुष्य ही हैं। इसी मनुष्य का विकराल रूप अर्थात् स्वभाव असुर कहाता है और संयम-नियम में जीने का स्वभाव इसे देवता बनाता है। जब मनुष्य कोई माँ-बाप बनकर बाल-बच्चों के लिए जीने लगता है, तब वह मनुष्य का रूप लेकर अपना जीवन अपने बच्चों के लिए दान करते हुए बिताता है ।

मनुष्य ही देवता है । यही कारण हमें बताया गया है कि हम देव-सन्तान है। तभी वेद कहता है कि मनुर्भव असुरो मा भव। तू मनुष्य बन असुर मत बन ।

वैश्वानर यज्ञ

वानप्रस्थी विश्वदेव मुनि

एक युग था, जब भारत में महाराज अश्वपति राज्य करते थे। एक दिन उन्होंने एक बड़ा यज्ञ – वैश्वानर यज्ञ – का अनुष्ठान किया। उसी समय पाँच जिज्ञासु ब्राह्मण आतिथ्य के दौरान उस राज्य की राजधानी में पहुँचे तो उन्हें उस यज्ञ की सुगंध मिली, और वहाँ आ पधारे। राजा ने उनका भी स्वागत किया और कहा कि जितना दान ऋषियों को मिलेगा उतना उनको भी बराबर देंगे। लेकिन ब्राह्मणों ने मनाकर दिया। महाराज अश्वपति ने सोचा कि मत न वे सोचते होंगे कि मैं राजा हूँ, मेरे कोष में अनुचित धन भी मिलता होगा, इस कारण उन्होंने धन स्वीकार करना ठीक नहीं समझा होगा। करोड़पति प्रजा होगी, वे कैसे धन कमाते होंगे और कर-रूप ऐसे पैसे राज्य के कोष में आते होंगे – इस शंका को दूर करने के लिये राजा अश्वपति ने विश्वास के साथ यह घोषणा की :

न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपः ।
नानाहिताग्निर्नाविद्वान् न स्वैरी स्वरिणी कुतः ।।

अर्थात् – हे विद्वान् ब्राह्मणो ! मेरे राज्य में न कोई चोर है, न बेईमान है, न कंजूस है, न शराबी है, प्रतिदिन यज्ञ करने वाले हैं, मूर्ख, अनपढ़, अविद्वान् भी नहीं। यहाँ कोई व्यभिचारी नहीं तो व्यभिचारिणी कहाँ से होगी ?

यह घोषणा एक आध्यात्मिक राजा (या प्रधान मन्त्री) ही कर सकता है, जो स्वयं इस मार्ग पर चलकर उदाहरण देता है। 'जस राजा तस प्रजा' की प्रसिद्ध कहावत है; राजा वा प्रधान मन्त्री सुधरे तो प्रजा सुधरे ।

कितने 'वाद' आये - साम्यवाद, पूँजीवाद, गणतंत्रवाद, राज्यवाद, व्यक्तिवाद (autocracy) आये। क्या एक ऐसा राज्य है, जहाँ राजा या प्रधान मन्त्री ऐसी घोषणा कर सकता है कि मेरे राज्य में कोई भ्रष्टाचारी नहीं है? ऐसी घोषणा सिर्फ़ महाराज अश्वपति ही कर सकता है।

चलते-चलते यहाँ यह कहना चाहता हूँ कि ऋषि दयानन्द जी ने 'सत्यार्थप्रकाश' में यह लिखा है कि स्वराज्य चाहे कितना ही बुरा क्यों न हो विदेशियों के राज्य से बेहतर है, हाँ लेकिन ऋषि का प्रथम उद्देश्य था कि भारतीयों को शुशिक्षित, संस्कारी बनाने, वैदिक-मूल्यों, आदर्शों को नस-नस में भरा जावे जिससे भ्रष्टाचार – गो-हत्या-जैसा पाप न हो। लेकिन भारत में कई आर्य समाजी नेता और अन्य व्यक्ति भी, पूर्वोक्त कोष्ठक – जैसे वाक्य से फ़ाइदा उठाकर ऋषि जी के उद्देश्यों को दूषित कर बैठे। गुरुकुल की पद्धति यह नहीं थी। प्रथम संस्कारी विद्वान्, वैज्ञानिक आदि मूल्यों से आर्य बनाना, तब राष्ट्र भक्ति से राष्ट्र निर्माण अनुष्ठान जहाँ कुरितियाँ, भ्रष्टाचार आदि दुष्कृत्य न हों। यह था ऋषि का प्रथम उद्देश्य ! दस नियमों को ध्यान से पढ़ें तो पता लगेगा कि उनकी राष्ट्र भक्ति कितनी ऊँची थी। वह तो देश की ही क्यों, संसार की उन्नति का घोषणा पत्र है ।

आर्यसमाज एक सांस्कृतिक, वैज्ञानिक, सैद्धान्तिक आंदोलन है, वेद मार्ग पर चलना-चलाना है, फूलों की सेज पर बैठना नहीं । काँटों पर, आग पर चलना है, safety zone – सुरक्षित कटिबंध में रहना नहीं है।

हम ऋषि जी के जन्मदिन पर धूम मचाते हैं – 'दयानन्द के वीर सैनिक बनेंगे' का नारा लगाते हैं – यहीं पूर्ण विराम ? क्या गाँव घूमने से वैदिक प्रचार होता है?

गुरुकुल कांगड़ी की कुछ महत्वपूर्ण बातें यहाँ जोड़ना प्रासंगिक होगा। गुरुकुल -- एक राजनीतिक, क्रान्तिकारी संस्था की अफ़वाह अंग्रेज़ों के कानों तक पहुँच गयी, यहाँ तक कि इंग्लैंड भी पहुँच गयी। Vice Roy के कान खड़े हो गये, वे भी वहाँ पहुँचे। Ramsay Macdonald M.P., जो आगे चलकर ब्रीटिश प्राइम मिनिस्टर बने, वे भी आये। यह भ्रम आर्यसमाज के विरोधियों की चुगलखोरी का परिणाम था। उलटे यहाँ आकर वे आर्यसमाज के उत्तम कार्यों से प्रभावित हुए।

ऋषि दयानन्द के कार्यों ने बहुत भारतीय विद्वानों को आकर्षित किया था। ऋषि जी वैदिक सिद्धान्त का प्रचार सच्चे स्वरूप में करते थे। लोग हज़ारों की संख्या में सुनने आते थे – ईसाई पाद्री, मुसलमान मौलाना, अंग्रेजी फौज़ के कपतान, पौराणिक आचार्य आदि सब सुनने आते थे। दूसरी ओर स्वराज का आन्दोलन भी ज़ोर पकड़ने लगा था। राजनैतिक नेताओं ने इस वातावरण का फाइदा उठाया। अब क्या था कि अंग्रेज़ इस संस्था को राजनीति क्रांति न समझें। अंधाधून धर-पकड़ होने लगी, कोर्ट मामला चलने लगे। आर्यसमाजियों को जेल में भेजा गया। इन सबका पूरा इतिहास आपको डॉ० भवानीलाल भारतीय की पुस्तक 'स्वामी श्रद्धानन्द ग्रंथावली' पढ़ने से मिल जाएगा।

दयानन्द का काम त्याग, तप, जीवन-समर्पन, अपमान सहना, गालियाँ भी सुनना, सब सहते हुए निरन्तर काम करना था। शास्त्र का आदेश भी है – **समृद्धिरसमृद्धिर्वा स वै तापस उच्यते।**

अर्थात् जो बाधाओं, कष्टों को सहते, लाँघते हुए निरन्तर लक्ष्य की ओर बढ़ता चला जाता है, उसे तपस्वी कहते हैं। और दूसरी बात है – सादापन अपनाएँ, सजावट छोड़ें।

यह पाठ जब हम ८-९ वर्ष के थे तब हमें पढ़ाया गया था (बाल शिक्षा) में, आज भी यह है।

धर्म से धन कमाएँ और अपनी इच्छाओं, कामनाओं को पूर्ण करने से मोक्ष सुख प्राप्त होता है, क्योंकि विचारमय-जगत में सूक्ष्म-शरीर की इन्द्रियों से आत्मा का भोग मिलता है।

पोथी पढ़-पढ़ जगमुआ दयानन्द भया न कोई,
मैदान में जो कूद जावे सो वीर दयानन्द होई।

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
प्रधान सम्पादक : डॉ० उदय नारायण गंगू,
पी.एच.डी., ओ.एस.के., जी.ओ.एस.के., आर्य रत्न
सह सम्पादक : श्री सत्यदेव प्रीतम,
बी.ए., ओ.एस.के, सी.एस.के., आर्य रत्न
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी, *पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर, *पी.एम.एस.एम, आर्य रत्न*
(३) श्री नरेन्द्र घूरा, *पी.एम.एस.एम,आर्य भूषण*
(४) प्रोफ़ेसर सुदर्शन जगेसर, *डी.एस.सी, जी.ओ.एस.के., आर्य भूषण*
(५) योगी ब्रह्मदेव मुकुन्दलाल, *दर्शनाचार्य*

इस अंक में जितने लेख आये हैं, इनमें लेखकों के निजी विचार हैं। लेखों का उत्तरदायित्व लेखकों पर है, सम्पादक-मण्डल पर नहीं ।
Responsibility for the information and views expressed, set out in the articles, lies entirely with the authors.
मुख्य सम्पादक

Printer : BAHADOOR PRINTING CO. LTD
Ave. St. vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 208-1317, Fax : 212-9038.

ओ३म् अग्निना रयिमश्नवत्पोषमेव दिवेदिवे । यशसं वीरवत्तमम् ।। ऋ० १/१/३

पंडिता अन्जनी महिपत, वाचस्पति

यह मन्त्र ऋग्वेद के प्रथम मंडल के प्रथम सूक्त का तीसरा मन्त्र है और ऋषि दयानन्द द्वारा लिखित 'आर्याभिविनय' का तीसरा मन्त्र है। इस मन्त्र में 'अग्निना' शब्द आया है, जिसका सरल अर्थ 'आग' है। एक भौतिक अग्नि है और दूसरी आध्यात्मिक अग्नि। भौतिक अग्नि प्रत्यक्ष दिखाई देती है। बिजली भी भौतिक अग्नि है, जिससे संसार के लगभग समस्त कार्य चलते हैं। परमात्मा ने मनुष्य को अपना कार्य पूरा करने के लिए ही यह भौतिक अग्नि दी है।

इसी भौतिक अग्नि से सर्वोत्तम कर्म - 'यज्ञ' किया जाता है। आध्यात्मिक अग्नि स्वयं परमात्मा है। परमात्मा वह अदृश्य अग्नि है, जो जगत् के कण-कण में समाया हुआ है। अग्नि रूप परमात्मा अपने प्रकाश से सूर्य को प्रकाशित करता है। भक्त उसी अग्नि स्वरूप परमात्मा से प्रार्थना करता है कि – **'अग्निना रयिमनश्वत पोषमेव'** अर्थात् हे अग्नि स्वरूप परमात्मन् ! आपकी असीम कृपा से मुझे रयिम् प्राप्त हो, जिससे मेरे शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का पोषण हो। यहाँ पर **'रयिम्'** शब्द का अर्थ है - धन। **'अश्नवत्'** - प्राप्त होता है और 'पोषमेव' का अर्थ है - पोषण करनेवाला ।

धन केवल रुपया-पैसा, ज़मीन-जायदाद नहीं है, जिसके पीछे हम भाग-दौड़ करते हैं। असली धन तो विद्या, स्वास्थ्य, यश, संतोष, बल, चातुर्य और चरित्र हैं। मनुष्य के पास एक सुखी और सुविधाजनक जीवन व्यतीत करने के लिए धन आवश्यक है। स्वास्थ्य बनाये रखने के लिए पौष्टिक अन्न चाहिए, जिससे शरीर का पोषण होता है। यदि शरीर पुष्ट, बलवान् तथा स्वस्थ रहे, तो सुख प्राप्त होता है। अतः पौष्टिक अन्न जुटाने का साधन धन है। विद्या मनुष्य का सबसे बड़ा धन है। विद्या-बल से मनुष्य धन कमाता है। विद्या दो प्रकार की है। एक 'अपराविद्या' और दूसरा 'पराविद्या'। जो विद्या स्कूलों में पढ़ाई जाती है, वह 'अपराविद्या' है और जो विद्या ब्रह्म-ज्ञानियों से प्राप्त होती है, वह 'पराविद्या' है। अपराविद्या धन कमाने और भौतिक उन्नति करने का साधन है। पराविद्या से ईश्वर का ज्ञान प्राप्त होता है। ईश्वर की उपासना आत्मा का भोजन है, जिससे आत्मा का पोषण होता है, आत्मिक बल बढ़ता है। आत्म-बल सबसे बड़ा बल है।

सत्य भी मनुष्य का धन है। महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज के चौथे नियम में कहा है कि *'सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।'* सत्य से मन शुद्ध होता है और मन का पोषण होता है। मनु महाराज का कथन है कि **'मनः सत्येन शुद्धयति।'** अर्थात् मन सत्य से शुद्ध होता है। सत्य से शुद्ध मन में प्रकाश आता है, जिससे मन शिव संकल्प वाला बन जाता है ।

मन्त्र में **'यशम'** शब्द आया है, जिसका अर्थ है - कीर्ति। यश मनुष्य का धन है। यश मनुष्य के अच्छे कर्मों की सुगन्ध है, जो सर्वत्र फैल जाती है। जिन महापुरुषों ने महान् कार्य किये हैं, उनका यश इस संसार में सर्वत्र फैला हुआ है। उन्होंने अमृत-सुख पाया है। इस संसार से विदा होने पर भी लोग उनके गुणगान और कर्मों का बखान करते थकते नहीं हैं। श्री रामचन्द्र जी, योगेश्वर श्री कृष्ण जी, स्वामी दयानन्द जी, महात्मा गांधी जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी आदि ऐसे ही यशस्वी महापुरुषों ने अपने उत्तम कर्मों और यश के कारण अमर-पद पाया है।

सन्तोष मनुष्य का ऐसा धन है, जो सभी के पास नहीं होता है। गरीब होते हुए भी जिस मनुष्य के पास संतोष रूपी धन है, वह सबसे सुखी व्यक्ति है और जिसके पास संतोष का धन नहीं है, वह इच्छाओं के भँवर में फँसकर, बहुत कुछ पाने के चक्कर में बहुत कुछ खो बैठता है।

मन्त्र में **'वीरवत्तमम्'** शब्द आया है, जिसका अर्थ है - वीरों में श्रेष्ठ। वीर का अर्थ है - बहादुर। भक्त प्रार्थना करता है कि हे प्रभु ! मुझे वीरता प्रदान कीजिए, जिससे मैं वीरों में श्रेष्ठ बनूँ । वीर वही होता है, जो किसी से भय नहीं खाता, कोई कठिन कार्य करने से पीछे नहीं हटता। वीर पुरुष अपने प्राणों को हथेली पर रखकर हर संकट का सामना करता है। अर्जुन, महाराणा प्रताप, शिवा जी जैसे वीर योद्धाओं और झाँसी की रानी जैसी वीरांगना ने वीरतापूर्वक शत्रुओं को पछाड़ा था।

चरित्र मनुष्य का सबसे बड़ा धन है। चरित्र का निर्माण विद्या से होता है। समाज में चरित्रवान् व्यक्ति का सम्मान होता है। किसी ने कहा है – "यदि धन गया तो कुछ भी नहीं गया, यदि स्वास्थ्य गया तो कुछ गया और यदि चरित्र गया तो सब कुछ चला गया।" यदि हम समाज में यश और सम्मान पाना चाहते हैं, तो हमें अपने चरित्र पर पूरा-पूरा ध्यान देना अनिवार्य है।

मन्त्र में **'दिवेदिवे'** का अर्थ है - प्रतिदिन। भक्त उस अग्नि स्वरूप परमात्मा से प्रार्थना करता है कि हे परमात्मन् ! आपकी महती कृपा से मुझे प्रतिदिन वह धन प्राप्त हो, जिससे मेरे शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का पोषण हो और मुझे पौष्टिक अन्न, बल, विद्या, यश, वीरता, संतोष, सत्य और आरोग्यता रूपी धन भी प्राप्त हो।

ऋषि दयानन्द संस्थान के पुस्तकालय में उपलब्ध पुस्तकें :-

१. आर्यसमाज का इतिहास - डॉक्टर सत्यकेतु विद्यालंकार द्वारा
   (i) Part 1,2,3,4,6,7
२. आर्यसमाज लेखक कोश - श्री भवानीलाल भारतीय द्वारा
३. मोरिशस आर्यसमाज का इतिहास - श्री प्रह्लाद रामशरण द्वारा
४. मोरिशस आर्यसमाज की विभूतियाँ - श्री प्रह्लाद रामशरण द्वारा
५. मोरिशस में आर्यसमाज की बहती अविरल धारा - डॉक्टर उषा शर्मा
६. आर्यसभा मोरिशस के परिष्कृत और संशोधित नियम - १९६५
७. आर्यसमाज मोम्बासा का पचास वर्षीय इतिहास
८. आर्यसमाज लाला लाजपत राय
९. आर्यसमाज विषयक साहित्य परिचय - श्री भवानीलाल भारतीय द्वारा
१०. आर्यसमाज और हिन्दी - श्री सूर्यदेव शर्मा
११. आर्यसमाज की भूमित्रा भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में
१२. आर्यसमाज के उज्ज्वल रत्न - पं० जयदेव जी शर्मा द्वारा
१३. आर्यसमाज के दस नियमों की व्याख्या
१४. आर्यसमाज के बीस बलिदानी - डॉ० भवानीलाल भारतीय द्वारा

श्रीमती रेशमा सुकर

Sunday 30 July 2017

SHRAVANI @ Pailles Arya Samaj

The satsangh of Sunday 30.07.2017 was indeed enriching for the members of the Pailles Arya Samaj. After Yajna, Yogi Bramdeo Mokoonlall, through a Power Point Presentation made an exposé on the types of knowledge in the Vedas.

Veda = Knowledge

He emphasised on a concept which Maharishi Dayanand Saraswati has brought forward in the RigVedādi Bhāshya Bhumika (Introduction to the Commentary on the Vedas) on the purpose / types of knowledge, namely: (i) ***Jnānārtha*** (the largest repository of true knowledge); (ii) ***Sattārtha*** (true / factual knowledge); (iii) ***Lābhārtha*** (for the overall well-being of mankind); and (iv) ***Vichārārtha*** (insightful seminal knowledge which is to be explored with discernment).

We give below the salient features of the PowerPoint Presentation :

- The Vedas constitute the oldest layer of knowledge of humanity and Sanskrit literature. The Vedas are known as ***shruti*** as this knowledge has been handed over to posterity since the creation of the Universe in the oral tradition, which led UNESCO to proclaim the Vedic Chanting tradition as Intangible Cultural Heritage of Humanity.
- Max Muller, renowned Indologist initially ascribed the Vedas to some 1,500 years B.C. but revised it to *'time immemorial'*. In fact the Vedic Chanting tradition itself includes reading of *tithi* (date) before Sandhyā and Yajnas) upholds the Vedas to 1,960,853,118 years, i.e. since human existence at creation of the universe.
- The Vedas are the one-and-only revelation, revealed by God to the four highest / elevated souls during Samādhi (meditation): RigVeda to Agni Rishi; YajurVeda to Vayu Rishi; SamaVeda to Aditya Rishi and AtharvaVeda to Angirā Rishi who in turn transmitted this knowledge to humanity, through their first student Brahma Rishi.
- The Vedas contains both *Aparā Vidyā* (worldly knowledge) and *Parā Vidyā* (spiritual knowledge), teaching us to live in harmony with our environment, vis-à-vis ourselves and within society as well as realise the goals of human life (*dharma, artha, kāma & moksha*).
- The Vedas serve as the road map to true / correct knowledge, actions and meditation / prayer (*Shuddha Jnāna*, *Karma* & *Upāsnā*); *Vijnāna* as the fourth limb implies physical, social and other sciences, but most importantly the logical / scientific applications of Jnāna, Karma and Upāsnā in day-to-day life.
- Ancillary Vedic literature compiled by sages (Rishis) consists of (i) the Upvedas dealing with medicine, military and defence, music, mechanics, architecture and engineering; (ii) the Vedānga relating to articulation and pronunciation, prosody, grammar, etymology of words, astronomy, rituals, institutional & ceremonial, spirituality, philosophy, rituals & samskāras, universal laws, economics, politics.

Yogi Bramdeo Ji drew special attention to some concepts which reveals the universality of the teachings of the Vedas, amongst others: ***Manurbhava*** …a call on men and women to become real human beings through noble thoughts, speech and actions; ***Mitrasya chakshushā samiksha mahe …***looking at all living and non-living beings with a friendly eye so as compassion drives us to help those in need as well as forgive those who act with ill-will; ***Vasudhaiva kutumbakam …***the world as but one family built on human values, not the current concept of globalisation dedicated only to the opening of frontiers for trade, economic exploitation, etc.; ***Sangachhadhvam samvadadhvam …***unity through harmony of thoughts, speech and actions (manasā, vāchā & karmanā) in utter contrast with the modern concepts of unity in diversity given that diversity in thoughts, speech and actions leaves one restless for life; ***Dhiyo yo nah prachodayāt …***praying for the illumination of our intellect be inspired to move towards truthful / noble thoughts and actions (*satya vichāron aur satya karmon mein prerita hon*); ***Om shanti shantih shantih …***universal peace (peace be unto all – living and non-living beings); ***Sarve bhavantu sukhinah …***universal welfare (peace, good health, progress & prosperity be unto all as well as all be free from pains, sorrows & disease.)

Yosmān dveshtiyam vayam dvishmastam vo jambhe dadhmaha in our daily Sandhya illustrates this vivid universality …we submit any ill-feeling (dislike, hatred, etc.) that others may nurture or express towards us to the divine justice and the ill-feeling that we may nurture or express towards others to the divine justice; Surrender to God is a two-way traffic!!

The universality of the teachings of the Vedas, he added, rests upon the universally accepted / recognised actions and attributes of God, some of which follow: ***Sarvavyāpaka*** …Omnipresent, He is present everywhere at all times; ***Sarvajna*** …omniscient, none of our thoughts, speech and actions escapes His attention; ***Nyāyakāri*** …all-Just, He gives the proper reward or penalty for each and every karma; ***Dayālu*** …all-Merciful, He continues to inspire us before we gear our mind, mouth and body into actions.

The Vedas are not the property of any individual, community, association or sect, NOT even the Arya Samaj, which was founded by Maharishi Dayanand Saraswati to bring mankind under the umbrella of the Vedic way of life …Back to the Vedas! The knowledge contained in the Vedas is meant to uplift the physical, moral/spiritual and social welfare of all in the whole world.

He appealed to all to start reading the Vedas by understanding the Gayatri Mantra, the word meaning as well as the purpose of praise (*stuti*), prayer (*prārthanā*) and meditation / contemplation (*upāsnā*). Proper meditation with mantra jāpa, the silent recitation of the hymn coupled with full understanding of the hymn is bound to transform our personality harmonising both the internal and external aspects. We need to make a first step, like in a sprint or a marathon – failing which we shall forever remain at the starting block. May we all dare to make that first step and we shall reach the goal.

Reshma Sookar, Secretary

==========//==========

Editorial Note : Yogi Bramdeo Ji has made this presentation across several Arya Samajs during the Veda Māsa (month of Shravan) and shared through the Internet. Below are excerpts of feedback received :

Shri Vedamitra Jugessur (*Belle Rose Arya Samaj)*: The PowerPoint presentation clearly elaborates on the origin, authority of the Vedas and the knowledge, the universal concepts, the human values, the goals of human life, the Gayatri mantra, etc. It will no doubt instil in listeners, viewers and readers the immediate urge to probe deeper into the Vedic teachings. Thanks to Yogi ji for the initiative.

Prof. Edward Ted Ulrich (U.S): Thanks for sharing the presentation on the Vedas with me. I enjoyed it …I look forward to meeting you in Mauritius in April 2018.

Mr. Belall (Consultant, Programs Management - Council of Religions): Thanks. I just had a quick look. Looks interesting. Will have to meet up and discuss in detail.

Mrs. Geeta Atmarow: Thanks this knowledge in a nut shell! Very well summarized! Om Shanti!

Mr. Vishal Tacouri, Sannyasa Wellness, Switzerland: Loved it ...as a very enlightening moment …pleased to connect with existing knowledge and fill in the gaps ...a great materials for an excellent philosophy class …want to learn the Vedas …but always putting away for other priorities. Thanks for sharing.

Dr. Radhavallabh Choudhary, India: Namaste Ji. Bahut achchā he. Dhanyavād

Dr. Jonathan Ravat, Institut Cardinal Jean Margeot: Thanks for all these profound slided and words

Veena Ramlokhun, Educator : The presentation shatters our belief that the Vedas are complex …renders the knowledge of the Vedas easy to understand by children, young and elderly people …very interesting …we do not lose focus …a good learning curve for all.

Subash Chandra Deeya, Pailles Arya Samaj: A simple, straightforward and effective way to spread the Vedic light to the common people as well as the elite.

Pta. Priamvada Dookhee, Belle Rose Virjanand Arya Samaj: A thought-provoking & highly appreciated exercise …away from the usual style prevailing in our samajs …attention-grabbing from beginning to end …easily understood through the use of visuals and flexibility in languages (Hindi, English, French & Creole) …need to adopt / encourage such strategies to reach the masses.

Yogesh Hurdyal, Petit Bel Air Arya Samaj: A concise presentation covering nearly everything …what the Vedas are … the proof of it being the first knowledge inherited to mankind …knowledge meant for physical as well as spiritual growth …applying them in real life shall bring us closer to the real goal of human life - eternal bliss or moksha.

Sunil Mahadoowa, Mesnil Arya Samaj: Our deep appreciation and gratitude to Yogi Ji for the PowerPoint presentation, an outstanding one and a landmark in the history of the Mesnil Arya Samaj (founded in 1929); a relaxed flow to inculcate Vedic knowledge to all, especially youngsters in quest of spiritual guidance.

Society on the Decline : Who is to blame?

Sookraj Bissessur, B.A. Hons

"The most approved behaviour of one man towards his fellow creatures lies in his treating everyone according to his worth, and in sympathizing with him from the core of his joys and sorrows, in his losses and gains. The contrary conduct is reprehensible."Maharshi Dayanand Saraswati

Any society which encourages a "Laissez faire" philosophy / policy in the upbringing of children endangers the future of pampered and over pampered children.

"Whatsoever a great man does, the same is done by others as well. Whatever standard he sets, the world follows." Bhagavad Gita

Mauritius is facing a huge cultural erosion. Cultural debasement is scathing all ethnic groups. Unwanted teenage pregnancies, alcohol, hard drugs, and escalating violence are no longer isolated issues. Parents have a major responsibility in the decline of human values.

Values are transmitted at home

Parents are the first educators to impart values, ethics and other core principles of life. Social behavior largely reflects the enormous investment parents make in the process of moulding the child's outlook.

Parents often complain that they have little time to spend with children, yet they do spend numerous hours watching soap-operas. Often they crave about the academic excellence of their children in the mirage, reflecting top jobs and ultimately overlook the child's conduct. Engrossed in their works, parents simply forget that they are the responsible parties of their children. Grandparents do not obtain love, warmth, respect and consideration. Parents also tend to cave in before their responsibilities within the whims caprice of their children.

Computer : the Modern God & Demon!

Each generation develops new values and teenagers tune to new trends sacrificing morality and values. Violence is a common feature. Parents fail to respond to the repeated invitations of school management and ignore the misconduct of children. Such attitude sends wrong signals and burgeoning violence at school is thus watered to a thorny cactus.

The media (Radio, television, cinema, newspaper), internet and social media (Facebook, etc.), and other periodicals also substantially contribute to the cultural debasement. To boost up sales many indulge in the huge proliferation of highly spicy materials ignoring the nasty consequences. Youngsters become an easy prey to cultural invasion and disintegration.

Parents invest in computers to enable children to be computer literate. However, wrong usage is ramping as these become tools to access undesirable materials or to connect to extremist movements. It's difficult for parents to monitor things round the clock, and the poison gradually sets in. The end-result is unimaginable.

Parents are not the only actors in the wide process of upholding values. Today's materialistic way of life looks only at end-results. The more filthy the spots and materials, the higher the sales and profits. Society is on the decline, values are fading away; sense of morality appears to be questionable.

Are we doing enough? By virtue of their inaction or in adequate action, we have our share of responsibility. The cap does not fit parents alone.

In the third chapter of Satyartha Prakash / Light of Truth, Maharshi Dayanand Saraswati elaborates on celibacy and Education. Education as per the Vedic edicts is not meant only for achieving materialistic happiness. It also paves the noble way to self-realization, Godliness and 'Moksha' (Salvation).

Everyone is aware that there is a soul in man but ignores same due to lack of knowledge. Gold, silver, diamonds and other precious stones enhance only the physical outlook- external beauty. Glamour, clamour and glitter increases the craving for physical satisfaction, ignoring the need to quench the thirst of the atma (soul)

Swami Dayanand exhorted that education should simultaneously prepare the human race to face the materialistic world to earn a decent living, to live as role models, and to promote the overall development which would uplift the physical, moral and spiritual standards of one and all. Such a person would be a matter of pride in his environment. Proper education through the Gurukul system ensures that students should live as Brahmacharis till their education is not completed. Swami Dayanand emphasizes that all children should be sent to schools. He has further added that the State should decree that education should be compulsory and the parents should answer for non-compliance. He also emphasizes on the performance of sacraments: the Yajopaveeta Samskaara or Sacred Tread ceremony, and the Vedaarambha Samskaara (initiation to formal education and acquire Vedic knowledge.

OM

The President & Members

Arya Sabha Mauritius

in collaboration with

Grand Port Arya Zila Parishad

extend a cordial invitation to you to attend the

85th Birth Anniversary of Late Shri Rajendrachund Mohith

&

Inauguration of Shri Rajendrachund Mohith Vedic Kendra

Date : Sunday 20August 2017
Time : 10.00 a.m
Venue : Smt LP Govindramen Ashram, Trois Boutiques, Union Vale

Several eminent personalities will grace the function by their presence.

Mahaprasad will be served on that occasion.

Your presence will be highly appreciated.

A.S.M.	Dr. O.N.Gangoo	S. Peerthum	R. Gowd
G.P.A.Z.P	D. Somnah	P. Ramdonee	A. Goreeba
	President	*Secretary*	*Treasurer*